Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852, Impact Factor: RJIF 5.44
Received: 05-03-2021, Accepted: 20-03-2021, Published: 05-04-2021
Volume 2, Issue 1, 2021, Page No. 13-15

रामचरितमानसः षोडश संस्कार

डॉ. शर्मिला यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, आई.बी.(पी.जी.) कालेज, पानीपत, हरियाणा, भारत

सारांश
तुलसीदास का विषय क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। उन्होंने जीवन के किसी अंग विशेष का चित्रण न करते हुए उसकी समग्रता का चित्रण किया। वे मर्यादावादी कवि थे । अतः उनकी कृतियों में लोकधर्म एवं मर्यादा का निर्वाह बराबर किया जाता रहा है। उनकी रचनाओं में भक्ति, धर्म, संस्कृति एवं साहित्य का अद्भुत संगम हुआ है। रामचरितमानस के माध्यम से भारतीय संस्कृति के रीति रिवाज धर्म, संस्कार नीति निरूपण को परिभाषित करने वाले तुलसीदास जी युग दृष्टा कवि है। वैदिक काल से ही गर्भावस्था से लेकर अन्त्येष्टि के संस्कारों का जो रूप तुलसीदास जी के काव्य में भिन्नता है वह अन्यत्र दुर्लभ है। 'रामचरितमानस' के तुलसी जी ने परम्परागत सभी संस्कारों का निरूपण भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर है।

मूल शब्दः षोडश संस्कार, भक्ति, धर्म, संस्कृति एवं साहित्य का अद्भुत संगम

प्रस्तावना

जिन्होंने चिर–पिपासु कुल संसार के हित रामभक्ति मंदाकिनी की धवल धारा बहाई है, जिन्होंने भक्त–भ्रमरों हित अपनी कृति–वाटिका (रामचरितमानस) से मकरंद प्रस्त्रावित किया है, जिन्होंने भगवती भारती की अप्रतिम प्रतिमा प्रत्यक्ष करा दी है, भला उनका प्रातः स्मरणीय नाम 'तुलसीदास' किसके हृदय पट पर अंकित न होगा। वस्तुतः उनके द्वारा रचित (रामचरितमानस) भारतीय संस्कृति का अक्षय कोश है। इस महाकाव्य में भारतीय संस्कृति के समस्त पहलुओं का आकलन किया गया है। वस्तुतः गोस्वामी तुलसीदास भारतीय संस्कृत के प्रबुद्ध आख्याता हैं।

यहाँ विषय परिवर्तन के लिए संस्कृति की व्याख्या नितांत अनिवार्य है । 'संस्कृति' शब्द 'सम' उपसर्ग पूर्वक 'कृ' धातु में 'क्तिन'प्रत्यय के योग से बना है। 'सम' का अर्थ है 'सम्यक् रूप से' और 'क'धातु 'करनष् के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। इस प्रकार सम्यक् रूप से किये गये कार्यो की श्रृंखला ही 'संस्कृतिष् है।[1] संस्कृति के अनेक पर्यायवाची हैं–'सभ्यता', 'आचार–विचार', 'संस्कियाष्, 'शुद्धि ', 'संस्कार', 'परिष्कार', आदि। 'संस्कृतिष् वास्तव में प्राकृतिक स्तर पर मानवीय प्रयत्नों द्वारा प्रारंभ की गई प्रकिया है।

'संस्कारष् शब्द संशोधन, परिष्करण, शरीर–शुद्धि, मानसी शिक्षा आदि के अर्थ में प्रयुक्त होता है।[2] रूढ़ अर्थो में शब्द पावनकारी धार्मिक कृत्यों के लिए प्रयुक्त होता है।[3] कर्म के वे प्रभाव जो मानव के जीवन को ढालते हैं, संस्कार कहलाते है। 'संस्कार' शब्द का प्रयोग सुशिक्षा अथवा प्रशिक्षण के लिए भी होता है।[4] डा0 हरिशचन्द्र वर्मा के अनुसार– "वे सत्भाव, सत्क्रियाएँ तथा धार्मिक अनुष्ठान संस्कार कहलाते हैं, जो व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक उन्नति और परिष्कृति के लिए किये जाते हैं। व्यक्ति के विचार और आचार का परिष्कार ही संस्कारों का मूल प्रयोजन हैं।"[5]

भारतीय संस्कृति में संस्कारों का विशिष्ट स्थान है। ये संस्कार मानव–प्रकृति को विकृति से मुक्त करके संस्कृति की ओर प्रेरित और प्रवृत्त करते हैं । विभिन्न स्मृतियों में संस्कारों की संख्या के विषय में वैमत्य है, किन्तु परवर्ती स्मृतियों की मान्यता प्रदान की गई है। वे संस्कार इस प्रकार हैं – गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जात कर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकरण, कर्ण–बेधन, विद्यारम्भ, उपनयन, वेदारम्भ, केशांत, समावर्तन, विवाह, अत्येष्ठि। संस्कार, वास्तव में, जीवन और जगत को , एक उर्ध्वमुखी रचनात्मक दिशा प्रदान करते हैं। संस्कार, वास्तव में, जीवन को दिशा देने वाले मानव–मूल्य हैं। संस्कार जीवन जीने की कला है। संस्कार विचार और आचार के परिष्कार की प्रकिया है। संस्कार मानसिक स्वास्थ्य के मूल तत्त्व हैं। संस्कार, सभ्यता और संस्कृति के परिष्कारकर्त्ता हैं। सभ्यता मानव जीवन का बाह्म पक्ष है। संस्कारों में दोनों पक्षों का सुन्दर समन्वय मिलता है। हिन्दी जीवन की रूपरेखा संस्कारों से सुनिर्मित और सुनिर्धारित है । संस्कारों में भौतिक, नैतिक और आध्यात्मिक तत्त्वों का सन्निवेश स्वाभाविक है। संस्कारों में रक्षण, पोषण, रंजन, संवर्द्धन और उन्नयन के तत्त्व समाहित हैं। 'संस्कार' व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन की शुचिता और उन्नति के संरक्षक एवं पोषक तत्त्व हैं।

तुलसी कृत 'रामचरितमानस' में निरूपति संस्कार

यदि देखा जाए तो तुलसी लोकजीवन को वैदिक मर्यादाओं के जोड़ने के पक्ष में थे। उनके ग्रंथ 'रामचरितमानस' में शास्त्र ज्ञान और लोकानुभव–दोनों का सुंदर समन्वय हुआ है। तुलसी का मूल ध्येय यह था कि भारतीय जीवन को संयत, मर्यादित और समुन्नत बनाया जाए। 'मानस' में भारत की लोक संस्कृत की भव्य झांकी देखने को मिलती है। तुलसी ने सोलह संस्कारों की प्रस्तुति सहज–सरल शब्दावली में की है। यथा–

1. गर्भादान संस्कारः वैदिक साहित्य में गर्भाधा संस्कार का अनेक स्थलों पर उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद में भ्रण–स्थापना के सम्बन्ध में देवी–देवताओ से प्रार्थनाएँ की गई हैं।[6] 'मानस' में तुलसी द्वारा निरूपति गर्भाधान संस्कार सूत्रों तथा स्मृतियों से प्रभावित न होकर प्राचीनतर वैदिक परम्परा से अनुप्राणित हैं।[7] मानसकार ने पुत्रेष्टि यज्ञ की हवि से रानियों को गर्भवती होने का अनुष्ठान किया है। यथा –

सृंगी रिषिहि वसिष्ठ बुलावा।
पुत्रकाम तुमयज्ञ करवा।।[8]

2. पुंसवन संस्कारः गर्भाधान के उपरांत गर्भस्थ शिशु को पुंसवन संस्कार द्वारा अभिषिक्त किया जाता था कि इस संस्कार के अनुष्ठान से नर संतान का जन्म होगा। अथर्ववेद में 'पुंसवन' शब्द का शाब्दिक अर्थ है–पुत्रोत्पत्ति। मानसकार के अनुसार दशरथ की तीनों पत्नियों को पुत्रेष्टि यज्ञ में अग्नि देवता ने पुत्रोत्पत्ति का वरदान दे दिया था, अतः पुंसवन संस्कार की आवश्यकता न समझी गई। इसी कारण तुलसी ने पुंसवन संस्कार का उल्लेख नाहीं किया है।

3. सीमन्तोन्नयन संस्कारः अनिष्टकारी अदृश्य शक्तियों से गर्भ की रक्षा करने, गर्भिणी का ऐश्वर्यमयी एवं प्रसन्न रखने तथा गर्भस्थ शिशु के दीर्घायुष्य के लिए मंगल कामना के उद्देश्य से इस संस्कार का विधान किया गया। सीमन्तोन्नयन का शाब्दिक अर्थ है–गर्भिणी के केशों को ऊपर उठाना या सजाना । इस संस्कार में मंत्रों के साथ होम होता है। लेकिन तुलसी ने इस संस्कार का उल्लेख नहीं किया है।

4. जात कर्म संस्कारः इस संस्कार का सम्बन्ध शिशु के जन्म से है। वैदिक काम में प्रसववती मॉ की प्रसव वेदना को दूर करने के लिए प्रार्थनाऍ की जाती थीं। 'मानस' में रामजन्म पर राजा दशरथ ने नंदी श्राद्ध करके जातकर्म सम्पन्न किया और तदुपरांत ब्राह्मणों को स्वर्ण, धेनु, वस्त्र आदि दान किये–

नंदी मुख सराध करि जातकरम सब कीन्ह।
हाटक धेनु बसन मनि कीन्ह विप्रन्ह कहं दीन्ह।।[9]

5. नामकरण संस्कारः गृहयसूत्रों में यह नियम निर्धारित है कि पुरूषों का नाम दो या चार अक्षरों का या समसंख्यक अक्षरों वाला होना चाहिए। मनु के अनुसार कन्या का नाम मंगल सूचक और आर्शीवादयुक्त होना चाहिए। तुलसी ने 'मानस' में नामकरण संस्कार का सुरूचिपूर्ण, सम्यक् निरूपण किया है। रमाने अथा आनंदित करने की विलक्षण क्षमता से युक्त होने के कारण एक पुत्र का नाम 'राम' रखा गया ।[10] विश्व के भरण–पोषण की क्षमता के कारण दूसरे का नाम भरत रखा गया।[11] शत्रु–हनन की क्षमता के कारण तीसरे का नाम शत्रुघ्न रखा गया। [12] शुभ लक्षणों से युक्त होने के कारण चौथे का नाम 'लक्ष्मण' रखा गया। [13]

6. निष्क्रमण संस्कारः यह एक गौण अनुष्ठान है। इस संस्कार के अन्तर्गत पिता बालक को प्रसूतिका–गृह से बाहर ले जाता है और मंत्रोच्चारण के साथ उसे सूर्य का दर्शन कराता है। यह संस्कार बालक के जन्म के पश्चात् बारहवें दिन से चतुर्थ मास तक किया जा सकता है। निष्क्रमण संस्कार के समय शंख – ध्वनि तथ वैदिक मंत्रों के साथ शिशु को बाहर लाया जाता है। तुलसी जी ने इस संस्कार का कहीं भी उल्लेख नहीं किया है।

7. अन्नप्राशन संस्कारः शास्त्रों के अनुसार यह संस्कार शिशु के जन्म के पश्चात् छठे मास में किया जाता है। डॉ. राजबली पांडेय के अनुसार, "अन्नप्राशन संस्कार के दिन भोजन के पदार्थ वैदिक मंत्रों के साथ स्वच्छ करके पकाये जाते थे।" [14] इस संस्कार का उल्लेख 'रामचरित मानस' में नहीं मिलता। हॉ, उनके ग्रंथ 'गीतावली' में इसका उल्लेख अवश्य मिलता है।

8. चूड़ाकरण संस्कारः इसे मुंडन संस्कार भी कहा जाता है। यह संस्कार बालक–जन्म के तीन वर्ष के अन्दर किया जाता है। इसका उल्लेख 'मानस' में मिलता है। सुश्रुतकार के अनुसार केशों, नखों और रोमों के अपमार्जन से प्रसन्नता, स्फूर्ति तथा उत्साह की वृद्धि होती है। मानसकार ने चूड़ाकरण के साथ विप्रो को दान–दक्षिणा देने का उल्लेख किया है–

चूड़ाकरन कीन्ह गुर जाई ।
विप्रन पुनि दछिना बहु पाई।।[15]

9. कर्णबेध संस्कारः आचार्य बृहस्पति के अनुसार यह संस्कार शिशु के जन्म के पश्चात् दसवें, बारहवें अथवा सोलहवें दिन किया जाता है। मानसकार ने कर्णभेद का वर्णन इस प्रकार किया है–

करणबेध उपवीत बिआहा।
संग संग सब भए उछावा।। [16]

10. विद्यारंभ संस्कारः इस संस्कार का आरंभ बालक की आयु के पॉचवें वर्ष में किया जाता था। जब सूर्य उत्तरायण में रहता था, उस समय और शुभ दिन संस्कार के लिए निश्चित कर लिया जाता था। बालक को स्नान कराके, अलंकृत करने के पश्चात् विनायक, सरस्वती, बृहस्पति और गृह देवता की पूजा की जाती थी। तदनन्तर होम किया जाता था और फिर ब्राह्मण बालक को आशीर्वाद देते थे और ब्राह्मणों को दक्षिणा दी जाती थी।[17] तुलसी ने चारो भाइयों के विद्यारम्भ का उल्लेख है। राम गुरू ग्रह में विद्याध्ययन के लिए गये और वहीं अल्पकाल में ही सब विद्या प्राप्त कर ली। यथा–

गुरू ग्रह पढ़न रघुराई ।
अल्पकाल विद्या सब पाई।।[18]

11. उपनयन संस्कारः सांस्कृतिक दृष्टि से इस संस्कार का विशेष महत्व है। उपनयन का अर्थ है–'सन्निकर ले जाना' अर्थात् बालक को शिक्षार्थ आचार्य के सन्निकार ले जाना। 'मानस' में चारों भाइयों के उपनयन संस्कार का उल्लेख मिलता है–

भये कुमार जबहिं सब भ्राता।
दीन्ह जनेऊ गुरू पितु माता।।[19]

12. वेदारंभ संस्कारः वेदाध्ययन के तात्पर्य है– संहिताओं के मंत्रों तथा ब्राह्मणों ग्रंथों का अध्ययन। प्राचीनकाल में उपनयन के साथ ही वेदों का अध्ययन प्रारंभ हो जाता था। गायत्री मंत्र से वैदिक अध्ययन का प्रारंभ माना जाता था। तुलसी 'मानस' में कहते हैं–

सोचिय विप्र जो वेद विहीना।
तजि निज धरमु विषय लयलीना।।[20]

यद्यपि चारों वेद राम की स्वाभाविक सांसे हैं तथापि राम वेद की महत्ता को लोक में प्रतिष्ठित करने के लिए लीलार्थ वेदों का अध्ययन करते हैं–

जकी सहज स्वासश्रुतिचारी।
सो हरि पढ़ यह कौतुकभारी।[21]

13. केशांत संस्कारः इस संस्कार में सिर के तथा शरीर के अन्य भागों–दाढ़ी–मूछ का क्षौर कर्म किया जाता था। इस अवसर पर ब्राह्मचारी गुरू को गऊ दान स्वरूप प्रदान करता था। इस संस्कार के साथ विद्यार्थी ब्रह्मचर्य का व्रत लेता था। तुलसी ने अपने 'मानस' में कहीं उल्लेख नहीं किया है।

14. समावर्तन संस्कारः समावर्तन का अर्थ है – वापस जाना अर्थात् गुरू–ग्रह से स्वगृह लौटना। गुरू के आदेशानुसार शिष्य स्नान करता था। गुरू की अनुमति से विद्यार्थी अपने घर लौटता था। 'मानस' में इस संस्कार का वर्णन नहीं मिलता ।

15. विवाह संस्कारः समस्त हिन्दू संस्कारों में विवाह को सर्वाधिक महत्ता प्रदान की गई हैं। ऋगवेद के अनुसार विवाह का उद्देश्य गृहस्थ होकर देवों के लिए यज्ञ करना तथा संतानोत्पत्ति करना था।[22] विवाह सम्बन्ध में वर–वधू के गुणों पर विशेष ध्यान दिया गया है। कुलीनता, सच्चरित्रता, गुण सम्पन्नता, स्वास्थय आदि वर के शुभ लक्षण माने गए हैं। तुलसी के रामचरित मानस में विवाह संस्कार को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। 'शिव पार्वती विवाह' में तथा 'राम सीता–विवाह' का 'मानस' में सविस्तार निरूपण हुआ है। सीता अभीष्ट वर की प्राप्ति की कामना से गौरी–पूजन करती है। पार्वती अभीष्ट वर की प्राप्ति हेतु तपस्या करती है। लग्न–पत्रिका भेजने का कृत्य विवाह– संस्कार का महत्त्वपूर्ण अंग है। सीता–विवाह के संदर्भ में लग्न–पत्रिका जनक के कुल गुरू शतानंद के द्वारा अयोध्या भिजवायी जाती है। 'वर – सज्जा', 'नगर – सज्जा', 'बारात – सज्जा' का वर्णन तुलसी ने वैविध्यपूर्ण व सजीव रूप से किया है। वर–वधू के पिताओं मंगल–मिलन, मण्डप सज्जा, वेदी निर्माण, गौरी–गणेश–पूजन, मधुपर्क, शाखोच्चार, कन्यादान, पाणिग्रहण, गठजोड़ी, भाँवरें, दहेज, कंगना खोलना आदि विषयों का भी विस्तार से वर्णन किया है।

16. अन्त्येष्टि संस्कारः अन्त्येष्टि क्रियाओं का उल्लेख वैदिक ग्रंथों में प्रापप्त होता है। वैदिक काल में जब किसी व्यक्ति की मृत्यु होती थी तो पहले उसे पुनर्जीवित करने के लिए मंत्रो का उच्चारण किया जाता था। जब इसमें सफलता नहीं मिलती थी, तब अन्त्येष्टि–क्रियाएँ प्रारंभ की जाती थीं। अथर्ववेद के अनुसार शव को स्नान कराया जाता था। – अन्त्येष्टि संस्कार के अन्तर्गत अर्थी निर्माण, शव–यात्रा, शवदाह, उदक कर्म आदि सम्मिलित हैं। 'रामचरितमानस' में राजा दशरथ के अन्त्येष्टि संस्कार का निरूपण हुआ है। भरत के आगमन की प्रतीक्षा में राजा के शव को तेल के भरी हुई नाव में रखा गया।[23] भरत के आने पर अन्त्येष्टि–क्रियाएँ प्रारंभ हुई। वैदिक रीति के शव को स्नान कराया गया।[24] सरयू तट पर चन्दन, अगर तथा अनेक सुगंधित द्रवों के चिता तैयार की गई। दाह क्रियाएँ करने और तिलांजति देने के उपरांत दशगात्र–विधान (दस दिनों का कृत्य) किया गया।

'रामचरितमानस' में तुलसी ने अधिकतर परम्परागत संस्कारों का निरूपण किया है। संस्कार – निरूपण में उन्होंने श्रुति–स्मृति ग्रंथों का प्रश्रय तो लिया ही है साथ में परम्परागत लोक–रीतियों को भी सम्मिलित किया है। इस प्रकार उनका संस्कार–निरूपण लोक और वेद–सम्मत है। विवाह– संस्कार निष्पण में तुलसी ने अनेक लोक–रीतियों का समावेश किया है। तुलसी ने अपने 'मानस' में अनेक मांगलिक द्रव्यों का उल्लेख किया है, जैसे– ध्वजा, पताका, पट, चँवर, कलश, तोरण, हल्दी, दूध, दही, अक्षत आदि। निमंत्रण देना, अभ्यागत के पैर धोना, आसन देना, गुरू को प्रणाम करके आज्ञा पाकर बैठना आदि अनेक शिष्टाचारों का उल्लेख भी 'मानस' में किया गया है। तुलसी ने संस्कारों का विस्तृत वर्णन करके भारतीय संस्कृति के व्यापक फलक को प्रस्तुत किया है ।

संदर्भ सूची

1. हरिश्चंद्र वर्मा, तुलसी साहित्य के सांस्कृतिक आयाम, पृ. 48
2. रामस्वरूप शास्त्री, आदर्श संस्कृत–कोश, पृ. 555
3. जे. डी. इटे, डिक्सनरी ऑफ दि हिंदी लैंग्वेज, पृ.715
4. कालिदास, रघुवंशम् (10, 16)
5. हरिश्चंद्र वर्मा, तुलसी साहित्य के सांस्कृतिक आयाम, पृ. 50
6. ऋग्वेद 10, 184
7. तुलसीदास, रामचरितमानस, 1, 188, 1–2
8. वही, 1, 188, 5
9. तुलसीदास, रामचरितमानस, 1, 193 (दो.)
10. वही, 1, 196, 2
11. वही, 1, 196, 3
12. वही, 1, 197, 1
13. वही, 1, 196, 3
14. राजबली पांडेय, हिन्दू संस्कार, पृ. 117
15. तुलसीदास, रामचरितमानस, 1, 202, 3
16. वही, पृ. 2, 9, 6
17. राजबली पांडेय, हिन्दू संस्कार, 141–142
18. तुलसीदास, रामचरितमानस, 1, 103, 2
19. वही, 1, 103, 3
20. वही, 1, 171, 2
21. वही, 2, 171, 4
22. वही, 1, 196, 4
23. ऋग्वेद 10, 85, 36, 5, 53, 4
24. तुलसीदास, रामचरितमानस, 2, 156, 1